



“बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ”

मैं एक मनुष्य हूँ और जो कुछ भी
मनुष्यता को प्रभावित करता है
उसी से मेरा मतलब है।

- सरदार भगतसिंह

Jayoti Muhim

मासिक समाचार पत्र
August, 2021

विश्वविद्यालय के माननीय संस्थापक डॉ. पंकज गर्ग सर की 48वीं जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय में 48 पौधों का रोपण किया गया।

22 जुलाई 2021 को विश्वविद्यालय के माननीय संस्थापक डॉ. पंकज गर्ग सर की 48वीं जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय में 48 पौधों का रोपण किया गया। डॉ. पंकज गर्ग विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं पूर्व सलाहकार थे, जिनकी सकारात्मक सोच और प्रोत्साहन के बजह से ही आज विश्वविद्यालय की हजारों छात्राओं के कई सपने साकार हुए हैं। और उन्होंने पूरे देश में विश्वविद्यालय की एक अलग पहचान बनाई उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के वर्तमान सलाहकार सम्माननीय श्री वेदांत गर्ग जी ने विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के डीन / डायरेक्टर्स के साथ मिलकर विश्वविद्यालय के माय बर्थडे गार्डन (My Birthday Garden) और हर्बल गार्डन (Herbal Garden) में 48 पौधों का वृक्षारोपण किया। 48 में से 1 पौधे को विश्वविद्यालय प्रांगण के माय बर्थडे गार्डन में रोपा गया, माय बर्थडे गार्डन में विश्वविद्यालय के हर सदस्य के जन्मदिन पर एक पौधा रोपण किया जाता है। और बाकि 47 पौधों का रोपण हर्बल गार्डन में हुआ। इन औषधिक पौधों में तुलसी, नीम, गुलमोहर, मोगरा, गुडहल जैसे कई पौधे शामिल हैं। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के वर्तमान सलाहकार सम्माननीय श्री वेदांत गर्ग जी द्वारा महिला शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु “डॉ. पंकज गर्ग फिलानशोपी” नाम से एक नयी पहल शुरू की गयी जिसके अंतर्गत विश्वविद्यालय स्टार्टअप “जेवी नारी शिक्षा” द्वारा प्रायोजित बालिका को ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर के सभी 7 संकायों द्वारा किसी भी व्यावसायिक कार्यक्रम में पूर्ण उच्च शिक्षा का पूरा खर्च स्पांसर करने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय के सभी सदस्य आगे भी माननीय संस्थापक डॉ. पंकज गर्ग सर की इसी विचारधारा को जारी रखने की पूरी कोशिश करते रहेंगे।



कारगिल विजय दिवस

(Article by Prity Ranolia)

कारगिल विजय दिवस स्वतंत्र भारत के सभी देशवासियों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है। भारत में प्रत्येक वर्ष 26 जुलाई को यह दिवस



मनाया जाता है। इस दिन भारत और पाकिस्तान की सेनाओं के बीच वर्ष 1999 में कारगिल युद्ध हुआ था जो लगभग 60 दिनों तक चला और 26 जुलाई के दिन उसका अंत हुआ और इसमें भारत विजय हुआ। कारगिल विजय दिवस युद्ध में शहीद हुए भारतीय जवानों के सम्मान हेतु यह दिवस मनाया जाता है। 1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद भी कई दिन सैन्य संघर्ष होता रहा। इतिहास के मुताबित दोनों देशों द्वारा परमाणु परीक्षण के कारण तनाव और बढ़ गया था। स्थिति को शांत करने के लिए दोनों देशों ने फरवरी 1999 में लाहौर में घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। जिसमें कश्मीर मुद्दे को द्विपक्षीय वार्ता द्वारा शांतिपूर्ण ढंग से हल करने का वादा किया गया था। लेकिन पाकिस्तान ने अपने सैनिकों और अर्ध-सैनिक बलों को छिपाकर नियंत्रण रेखा के पार भेजने लगा और इस घुसपैठ का नाम “ऑपरेशन बढ़” रखा था। इसका मुख्य उद्देश्य कश्मीर और लद्दाख के बीच की कड़ी को तोड़ना और भारतीय सेना को सियाचिन ग्लेशियर से हटाना था। पाकिस्तान यह भी मानता है कि इस क्षेत्र में किसी भी प्रकार के तनाव से कश्मीर मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनाने में मदद मिलेगी। प्रारम्भ में इसे घुसपैठ मान लिया था और दावा किया गया कि इन्हें कुछ ही दिनों में बाहर कर दिया जाएगा। लेकिन नियंत्रण रेखा में खोज के बाद और इन घुसपैठियों के नियोजित रणनीति में अंतर का पता चलने के बाद भारतीय सेना को अहसास हो गया कि हमले की योजना बहुत बड़े पैमाने पर किया गया है। इसके बाद भारत सरकार ने ऑपरेशन विजय नाम से 2,00,000 सैनिकों को भेजा। यह युद्ध आधिकारिक रूप से 26 जुलाई 1999 को समाप्त हुआ। इस युद्ध के दौरान 550 सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान दिया और 1400 के करीब घायल हुए थे।

World Hepatitis Day

World Hepatitis Day (WHD) is recognized annually on July 28th, the birthday of Dr. Baruch Blumberg (1925–2011). Dr.

Blumberg discovered the hepatitis B virus in 1967, and 2 years later he developed the first hepatitis B vaccine. These achievements



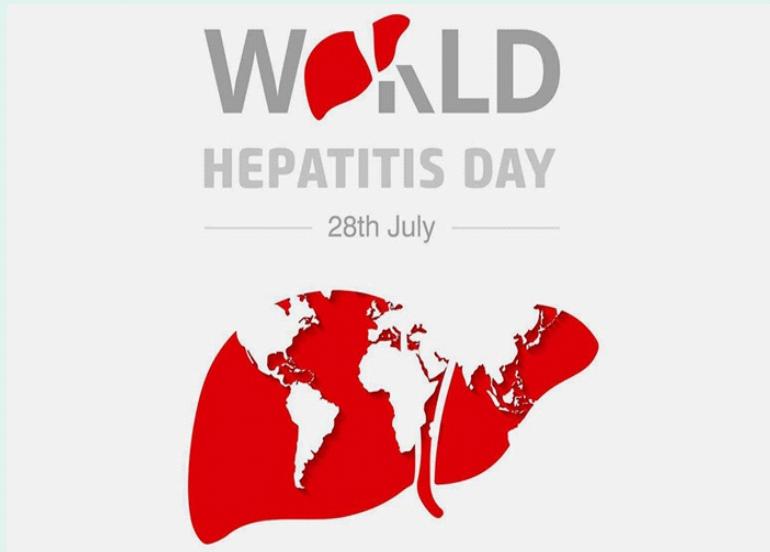
culminated in Dr. Blumberg winning the Nobel Prize in Physiology or Medicine in 1976. Organizations around the world, including the World Health Organization (WHO) and CDC, commemorate WHD to raise awareness about viral hepatitis, which impacts more than 354 million people worldwide. WHD creates an opportunity to educate people about the burden of these infections, CDC's efforts to combat viral hepatitis around the world, and actions people can take to prevent these infections.

Viral Hepatitis — a group of infectious diseases known as Hepatitis A, Hepatitis B, Hepatitis C, Hepatitis D and Hepatitis E — affects millions of people worldwide, causing both acute (short-term) and chronic (long-term) liver disease. Viral hepatitis causes more than one million deaths each year. While deaths from tuberculosis and HIV have been declining, deaths from hepatitis are increasing. The vision of CDC is to eliminate viral hepatitis in the United States and globally. CDC collaborates with International Partners to help countries experiencing high rates of infection to prevent, control, and eliminate viral hepatitis. Beginning in 2015, CDC partnered with the country of Georgia to launch the first Hepatitis C Elimination Program in the world. In 2019, Georgia was designated the first-

ever EASL International Liver Foundation Center of Excellence external icon in viral hepatitis elimination. In June 2021, CDC and the National Center for Disease Control and Public Health, Tbilisi, Georgia (NCDC) conducted training and launched the second nationwide hepatitis B, hepatitis C, and COVID-19 serosurvey. The serosurvey will provide information on progress toward the prevention and elimination of hepatitis B and hepatitis C in Georgia, and will provide key information for ongoing interventions needed to meet viral hepatitis elimination targets. The field work for this survey is expected to finish in September 2021. CDC's international work helps reduce disease burden globally, including for overseas travelers and those migrating to the United States.

Global Hepatitis Work in Other Countries

To further decrease the burden of all types of viral hepatitis, CDC also helps countries build capacity for surveillance, testing, care, and treatment and assists with development and implementation of national control and elimination programs. CDC has recently supported other countries, including Pakistan, Uzbekistan, and Tanzania.



World Nature Conservation Day

The World Nature Conservation Day is observed annually on July 28. The occasion aims to create awareness about the need to preserve the environment and natural resources in

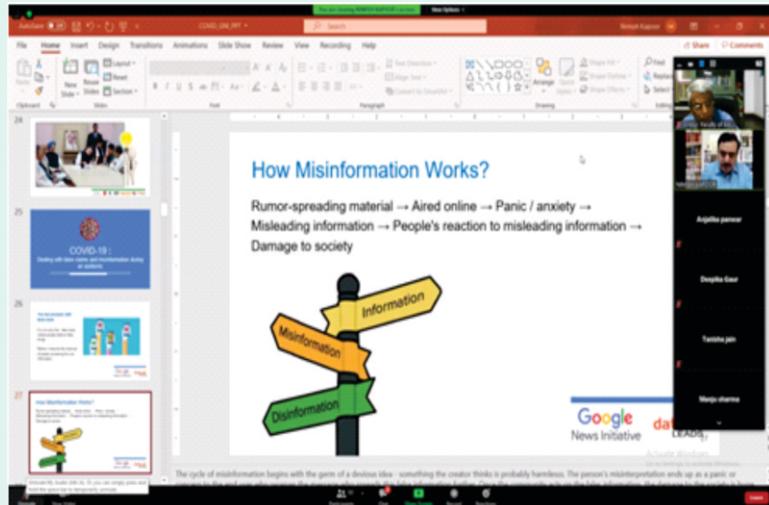


order to keep the world healthy. Saving plants and animals that are threatened with extinction is one of the primary focuses of the World Nature Conservation Day. There is also an emphasis on keeping the various components of nature intact. These include flora & fauna, energy resources, soil water and air. This occasion is an attempt at recognizing that a healthy and well-functioning environment is critical for sustaining a stable, productive human society. It also underlines the need for preserving the environment for the posterity. In recent times, the need for keeping the environment has become more stark in view of relentless human overexploitation of resources, which has led to weird weather patterns increasingly being the norm the world over.



ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में शनिवार को 'फैक्ट वेरिफिकेशन' एक वर्चुअल वर्कशॉप ओर्गनइज करवाई गयी।

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय में शनिवार को 'फैक्ट वेरिफिकेशन' यानी की तथ्य पुख्तीकरण विषय पर एक वर्चुअल वर्कशॉप ओर्गनइज करवाई गयी, कार्यक्रम के मुख्य वक्ता निमिष कपूर रहे जो कि साइंस फिल्म डिवीज़न एंड पब्लिकेशन डिवीज़न डीएसटी, दिल्ली विज्ञान प्रसार के प्रिंसिपल सङ्निहित और हेड हैं। कार्यक्रम की शुरुआत जर्नलिज्म डिपार्टमेंट की असिस्टेंट प्रोफेसर मिस दीक्षा सक्सेना ने विश्वविद्यालय के प्रॉफेसर और फैकल्टी ऑफ एजुकेशन एंड मेथोडोलॉजी के डीन डॉ. शोभा लाल और प्रमुख वक्ता और सभी विद्यार्थियों के स्वागत के साथ की। डॉ. लाल सर ने विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन माननीय विदुषी गर्ग और माननीय एडवाइजर श्री वेदांत गर्ग का आभार व्यक्त किया और वर्कशॉप की शुरुआत की। वर्कशॉप का अंतराल दो घंटे का रहा जिसमें निमिष कपूर जी ने गूगल के द्वारा फैक्ट चेकिंग, फोटो और वीडियो के ऑनलाइन वेरिफिकेशन और इसी में मददगार गूगल के कई टूल्स के बारे में बताया। उन्होंने मिसइन्फोर्मेशन, डिसइन्फोर्मेशन और मिसलीडिंग इनफॉर्मेशन के अंतर समझाये साथ साथ बहुत सी चीज़ों के बारे में बताया। इस सेशन में विद्यार्थियों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और साथ ही डेमोस्ट्रेशन्स को भी अपनाया। वर्कशॉप के समापन के नज़दीक पहुंचते हुए कई तथ्यों के बारे में पता लगने के साथ ही छात्राओं के काफी प्रश्नों के भी जवाब मिले। इसके साथ ही डॉ. लाल सर ने अंत में श्री निमिष कपूर का वोर्कशॉप के लिए अभिवादन किया और वर्कशॉप का समापन किया।



पिछले पचास वर्षों की उलझन मलेरिया जैसी घातक बीमारी की वैक्सीन 2021 ने खोजी मलेरिया पिछले 50 सालों से चली आ रही एक जानलेवा बीमारी है। जितने लोग पिछले एक साल में कोरोना से मरे हैं इतने ही हर साल अफ्रीका में केवल मलेरिया से मर जाते हैं। हर साल करीब 50 करोड़ लोग मलेरिया के चपेट में आते हैं और 10 लाख से ज्यादा लोग मर जाते हैं। उप सहारा अफ्रीका के युवाओं और बच्चों के मरने का आंकड़ा सबसे अधिक है। इतनी भयंकर बीमारी का आज तक कोई जड़ से खत्म कर देने वाला ईलाज नहीं मिल पाया था 12 साल पहले वैज्ञानिकों ने मलेरिया के ईलाज की दवा खोजी जो मलेरिया का प्रभाव शरीर पर कम होने देती है यह ईलाज भी काफी सफल रहा लेकिन मलेरिया को जड़ से खत्म कर देने वाली वैक्सीन की खोज अब सफल हो पाई है।

एक मच्छर के काटने से होने वाली बीमारी मलेरिया का ईलाज जहां पिछले 50 वर्षों से वैज्ञानिकों को नहीं मिल पाया था उसका ईलाज ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के शोधकर्ता ने निकाल दिया है। मलेरिया को जड़ से खत्म कर देने वाली दुनिया की पहली वैक्सीन R21/Matrix M का परीक्षण पश्चिम अफ्रीका के बुर्कीना फासो में 450 बच्चों पर किया गया है। इस वैक्सीन को शोध कर्ताओं ने पिछले 12 महीने से लगातार करीब से मॉनिटर किया और पाया कि यह वैक्सीन 77 फीसदी तक सफल है। विश्व स्वास्थ्य संगठन किसी भी वैक्सीन की सफलता 75 फीसद के मिनिमम सक्सेज की मांग करता है इस तरह देखे तो इस वैक्सीन की सफलता दर काफी अच्छी है। वैक्सीन का परीक्षण 5 महीने से लेकर 17 महीने तक के 450 बच्चों पर किया गया है। वैक्सीन को अलग अलग प्रकार से जांचने के लिए बच्चों को तीन समुहों में विभाजित किया गया। पहले समूह R21/Matrix M वैक्सीन कम मात्रा में दी गई, दूसरे समूह को R21/Matrix M वैक्सीन ज्यादा मात्रा में दी गई और तीसरे समूह को वैक्सीन नहीं दी गई इसकी बजाय रेबीज की वैक्सीन दी गई। पहले समूह को जिसे कम मात्रा में वैक्सीन दी गई उस समूह में 71 फीसद सफलता मिली, दूसरा समूह जिसे ज्यादा मात्रा में वैक्सीन दी गई थी उस समूह में 77 फीसद सफलता मिली और तीसरे समूह को जिसे मलेरिया वैक्सीन की बजाय रेबीज वैक्सीन दी गई थी उसमें मलेरिया से शिकार होने वालों का प्रतिशत ज्यादा रहा। R21/Matrix M वैक्सीन का अगला परीक्षण 5 महीने से लेकर 3 साल तक के पांच हजार बच्चों पर किया जाएगा। जिसके लिए शोधकर्ता अफ्रीका के चार बड़े देशों को चुन सकते हैं अगर इस बार का ट्रायल सफल साबित होता है तो वैज्ञानिकों में आगे की उम्मीद जगेगी और जल्द से जल्द मलेरिया को जड़ से खत्म कर देने वाली वैक्सीन को बड़ी सफलता मिल जाएगी।